नोट -

1. नवीन छात्रों की उच्चारण शुद्धि हेतु अमरकोष पढ़ाएँ (समयानुसार)।
2. वेदमन्त्रों की अक्षुण्ण परम्परा को बनाए रखने हेतु प्रत्येक छात्र का उच्चारण एवं स्वर शुद्ध हो इसका विशेष ध्यान रखते हुए छात्रों को उच्चारण स्थान इत्यादि से परिचित कराये।
3. नवीन छात्रों से उनका गोत्र, शाखा इत्यादि ज्ञात कर उसको स्वशाखाध्ययन कराने का प्रयत्न करें।
4. प्रत्येक वर्ष के पाठ्यक्रम का गुरुमुख से सम्पूर्ण अध्यापन एवं स्वाध्याय पूर्वक कण्ठस्थीकरण उसी वर्ष में पूर्ण करना अनिवार्य है।
5. छात्रों को परम्परागत सस्वर अध्ययन पद्धति से ही वेद अध्यापन कराना अनिवार्य है। जैसे -

   16 सन्था पद्धति

   अथवा

   10 पाठ

   10 वल्लि/दशावृत्ति/सन्था
6. प्रत्येक माह के अन्त में (पढाये गए विषयों की) मासिक परीक्षा कर छात्रों के कण्ठस्थीकरण, उच्चारण आदि की स्थिति का अवलोकन करें। यदि न्यूनता हो तो पूर्ण करें।
7. छात्रों की उच्चारण शुद्धि एवं ज्ञानवर्धन के लिए प्रतिदिन प्रातः एवं सायं सन्ध्या के पश्चात् विष्णुसहस्त्रनाम, महिषासुरमर्दिनी स्तोत्रम्, दक्षिणामूर्तिस्तोत्रम्, अन्नपूर्णास्तोत्रम्, भजगोविन्दम्, प्रज्ञाविवर्धनस्तोत्रम्, रामरक्षास्तोत्रम् इत्यादि स्तोत्रों का समयानुसार अभ्यास एवं पाठ करें, जिससे भारतीय परम्परा में श्रद्धा एवं उत्साह बना रहें।
8. गतवर्षों का पाठ्यक्रम छात्र को कण्ठस्थ है या नहीं ज्ञात करने हेतु परीक्षण (Assessment) किया जाएगा।
9. परीक्षक को विगत सभी वर्षों के पाठ्यक्रम से प्रश्न पूछने का पूर्ण अधिकार होगा।
10. सस्वर वेदाध्ययन करने वालों की संख्या शनैः शनैः क्षीण हो रही है। अतः श्रद्धावान्, मेधावान् एवं दार्ढ्य बुद्धि वाले छात्रों की वेदाध्ययन में रुचि उत्पन्न करने हेतु आवश्यक प्रयत्न करना।

महर्षि सान्दीपनि राष्ट्रीय वेदविद्या प्रतिष्ठान, उज्जैन

(शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार)

शुक्लयजुर्वेद काण्व शाखा पाठ्यक्रम

वेदविभूषण प्रथमवर्ष (उत्तरमध्यमा प्रथमवर्ष / कक्षा XI समकक्ष)					
पुरुषसूक्त । उत्तरनारायणसूक्त । विष्णुसूक्त । सरस्वतीसूक्त । मेधासूक्त । रुद्रसूक्त (नमस्ते रुद्र 1 अनुवाक) । शांतिसूक्त (आ नो भद्रा) । ईशावास्य सम्पूर्ण अध्याय (पदपाठ)। समिधाग्निं सम्पूर्ण अध्याय । अग्निसूक्त (समास्त्वा 1 अनुवाक) सभी सूक्तों का पदपाठ कण्ठस्थीकरण । लगध ज्योतिष (मूलमात्र) । बृहदारण्यकोपनिषद् अध्याय 4 सम्पूर्ण कण्ठस्थीकरण । शुक्ल यजुर्वेद प्रातिशाख्य अध्याय 8 (मूलमात्र) ।					
क्रमांक	**माह / पक्ष**	**पाठ्यक्रम बिन्दु**	**मन्त्र संख्या**	**अंक**	**अध्ययन-अध्यापन**
1	प्रथम माह	पुरुषसूक्त, उत्तरनारायणसूक्त, विष्णुसूक्त (पदपाठ)	30 मन्त्र	10	1. छात्र नित्य त्रिकाल सन्ध्या एवं अग्निकार्य अत्यन्त श्रद्धायुक्त होकर त्रिकालसन्ध्या के समय का ध्यान में रखकर अनिवार्य रूप से करें। 2. प्रतिदिन सायंकालीन सन्ध्या के पश्चात् अधीत स्तोत्रादि का पाठ करें। 3. पदपाठ के मन्त्रों की सन्था अध्यापक द्वारा 4 बार ग्रहण करें। स्वयं 8 बार कर के अध्याय कण्ठस्थ करें। 4. पदपाठ के मन्त्रों को कण्ठगत कर के अध्यापक को कण्ठस्थ सुनावें। कण्ठस्थ मन्त्रों की प्रतिदिन आवृत्ति करें। 5. पाठ्यक्रमानुसार प्रातिशाख्य के अष्टम अध्याय के सूत्रों को कण्ठस्थ करें। 6. संहिता के अध्यायों को प्रतिदिन 10 अध्याय इस प्रकार आवृत्ति करें। प्रत्येक माह में कम से कम 5 पारायण पूर्ण होंगे।
2	द्वितीय माह	सरस्वतीसूक्त, मेधासूक्त, रुद्रसूक्त (नमस्ते रुद्र 1 अनुवाक) (पदपाठ)	29 मन्त्र	10	
3	तृतीय माह	शांतिसूक्त (आ नो भद्रा), ईशावास्य सम्पूर्ण अध्याय (पदपाठ)	28 मन्त्र	10	
4	चतुर्थ माह	समिधाग्निं (3 अध्याय 1 से 30 मन्त्र) (पदपाठ)	30 मन्त्र	10	
5	पञ्चम माह	समिधाग्निं (3 अध्याय 31 से 58 मन्त्र) (पदपाठ)	27 मन्त्र	10	
6	षष्ठ माह	समिधाग्निं (3 अध्याय 59 से 76 मन्त्र) (पदपाठ) अग्निसूक्त (समास्त्वा 1 अनुवाक) (पदपाठ)	18 मन्त्र 10 मन्त्र	10	
7	सप्तम माह	शुक्ल यजुर्वेद प्रातिशाख्य अध्याय 8 (मूलमात्र)	62 सूत्र	10	
8	अष्टम माह	बृहदारण्यकोपनिषद् अध्याय 4 ब्राह्मण 1 - 3	49 कंडिका	10	
9	नवम माह	बृहदारण्यकोपनिषद् अध्याय 4 ब्राह्मण 4 - 5	40 कंडिका	10	
10	दशम माह	बृहदारण्यकोपनिषद् अध्याय 4 ब्राह्मण 6, लगध ज्योतिष सम्पूर्ण	3 कंडिका	10	
नोट - कण्ठस्थीकरण, उच्चारण एवं स्वरसंचालन प्रत्येक की 100-100 अंकों की इस प्रकार 300 अंकों की परीक्षा होगी।			172 मन्त्र 92 कंडिका	100 अंक	

महर्षि सान्दीपनि राष्ट्रीय वेदविद्या प्रतिष्ठान, उज्जैन

(शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार)

शुक्लयजुर्वेद काण्व शाखा पाठ्यक्रम

वेदविभूषण द्वितीयवर्ष (उत्तरमध्यमा द्वितीयवर्ष / कक्षा XII समकक्ष)

पुरुषसूक्त। उत्तरनारायणसूक्त। विष्णुसूक्त। सरस्वतीसूक्त। मेधासूक्त। रुद्रसूक्त (नमस्ते रुद्र 1 अनुवाक)। शांतिसूक्त (आ नो भद्रा)। ईशावास्य सम्पूर्ण अध्याय (क्रमपाठ) समिधाग्निं सम्पूर्ण अध्याय। अग्निसूक्त (समास्त्वा 1 अनुवाक) सभी सूक्तों का क्रमपाठ कण्ठस्थीकरण। पुरुषसूक्त एवं उत्तरनारायणसूक्त का जटा एवं घनपाठ। अष्टविकृतिलक्षण (चरणव्यूहानुसार) 1-1मन्त्र उदाहरण। बृहदारण्यकोपनिषद् अध्याय 5-6 सम्पूर्ण कण्ठस्थीकरण।

क्रमांक	माह / पक्ष	पाठ्यक्रम बिन्दु	मन्त्र संख्या	अंक	अध्ययन-अध्यापन
1	प्रथम माह	पुरुषसूक्त, उत्तरनारायण सूक्त, विष्णु सूक्त (क्रमपाठ)	30	10	1. छात्र नित्य त्रिकाल सन्ध्या एवं अग्निकार्य अत्यन्त श्रद्धायुक्त होकर त्रिकालसन्ध्या के समय का ध्यान में रखकर अनिवार्य रूप से करें। 2. पूर्ववर्षीय पाठ्यक्रमानुसार पदपाठ के कण्ठस्थ सूक्तों की प्रतिदिन आवृत्ति करें। 3. क्रमपाठ की सन्धियों को ठीक से समझकर अध्यापक द्वारा 4 बार तथा स्वयं 8 बार सन्था करें। 4. संहिता के अध्यायों को प्रतिदिन 10 अध्याय इस प्रकार आवृत्ति करें। प्रत्येक माह में कम से कम 5 पारायण पूर्ण होंगे।
2	द्वितीय माह	सरस्वती सूक्त, मेधासूक्त, रुद्रसूक्त (नमस्ते रुद्र 1 अनुवाक) (क्रमपाठ)	29	10	
3	तृतीय माह	शांतिसूक्त (आनोभद्रा) ईशावास्य सम्पूर्ण अध्याय (क्रमपाठ)	28	10	
4	चतुर्थ माह	समिधाग्निं (3 अध्याय 1 से 30 मन्त्र) (क्रमपाठ)	30 मन्त्र	10	
5	पञ्चम माह	समिधाग्निं (3 अध्याय 31 से 58 मन्त्र) (क्रमपाठ)	27 मन्त्र	10	
6	षष्ठ माह	समिधाग्निं (3 अध्याय 59 से 76 मन्त्र) (क्रमपाठ) अग्निसूक्त (समास्त्वा 1 अनुवाक)	18 मन्त्र 10 मन्त्र	10	
7	सप्तम माह	पुरुषसूक्त एवं उत्तरनारायणसूक्त का जटा एवं घनपाठ। अष्टविकृति लक्षण (चरणव्यूहानुसार) तथा 1-1 मन्त्र उदाहरण	22 मन्त्र 8 मन्त्र	10	
8	अष्टम माह	बृहदारण्यकोपनिषद् अध्याय 5 ब्राह्मण सं. 1 से 15 पर्यन्त	30 कंडिका	10	
9	नवम माह	बृहदारण्यकोपनिषद् अध्याय 6 ब्राह्मण सं. 1 से 3 पर्यन्त	43 कंडिका	10	
10	दशम माह	बृहदारण्यकोपनिषद् अध्याय 6 ब्राह्मण सं. 4 से 5 पर्यन्त	32 कंडिका	10	
नोट - कण्ठस्थीकरण, उच्चारण एवं स्वरसंचालन प्रत्येक की 100-100 अंकों की इस प्रकार 300 अंकों की परीक्षा होगी।			172 क्रमपाठ 22 जटापाठ 105 कंडिका	100 अंक	